द. स्वदेश, भोपाल
29 JUN 2011

# नया टर्मिनल

भोपाल में राजा भोज एयरपोर्ट के नए टर्मिनल का मंगलवार को लोकार्पण हो गया। इस पर लगभग 205 करोड़ रु. खर्च हुआ है। यह काफी अत्याधुनिक है। सर्व-सुविधायुक्त है। 700 से ज्यादा कारें और बसें यहां खड़ी की जा सकती हैं। 700 यात्रियों के बैठने का इंतजाम है। भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण के अलावा इस पर मप्र सरकार का भी लगभग 35 करोड़ रु. लगा है। 400 एकड़ जमीन दी है, वह अलग। यानी मप्र और खासकर भोपाल को व्यापारिक और सांस्कृतिक तरक्की के नक्शे पर उकेरने की यह दोतरफा पहल फिलहाल तो बड़ी जोरदार लगती है।

यों, हवाई यात्राओं से आम आदमी का सीधा साबका नहीं होता है। पर आम आदमी के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के सपने गढ़ने वाले हवाई जहाजों में ही सफर किया करते हैं। लिहाजा, आम आदमी, तरक्की के इस माडल से कहीं न कहीं जुड़ा जरूर है। अभी तक भोपाल आने वाले भोपाल तक की सीधी यात्राएं नहीं कर पाते थे। वे बजरिया कहीं-कहीं से होते हुए यहां पहुंचते थे। अब भोपाल उनकी सीधी रीच में होगा। चाहे वह कहीं का सांस्कृतिक दल हो या विदेशी प्रतिनिधिमंडल हो या कि राजनीतिक दल का सर्वेसर्वा या कारपोरेट घराने का मालिक और उनके एक्जीक्यूटिव। उनको कनेक्टिंग फ्लाइट लेने की आवश्यकता नहीं है। ये नया टर्मिनल बाहर की पूंजी निवेश के तो मप्र में अवसर खोलेगा ही, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भी कई नई राहें इससे खुल सकेंगी। पहले हज यात्री जेद्दाह जाने के लिए काफी परेशान रहते थे। अब वे यहां से सीधी उड़ान भर सकेंगे।

मप्र सरकार के नेक इरादे की भी यह एक मिसाल है। आम तौर पर ऐसे प्रोजेक्ट राज्य और केंद्र के टकराव में उलझे रहते हैं। पर अपनी सरकार की यह नेकनीयती ही है कि आम नागरिकों को वैकल्पिक रास्ता देने के लिए उसने अलग से पांच करोड़ रु. दिए हैं। जाहिर, इस टर्मिनल का सबसे ज्यादा फायदा मप्र को ही मिलना है। देश में ऐसी मिसालें हैं जब छोटे से छोटे शहर हवाई अड्डा बनते ही तरक्की के एक नए मुकाम पर जा बैठे। मप्र तो एक विशाल प्रदेश है और ये नया टर्मिनल इसकी विशालता को ही प्रदर्शित करेगा। इस उपलब्धि के लिए बधाई।